

## बांधवगढ़ के जंगलों में मली बौद्ध गुफाएँ

[भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण \(Archaeological Survey of India-ASI\)](#) ने मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ टाइगर रज़िर्व में बौद्ध गुफाओं और स्तूपों की खोज की है।

### प्रमुख बटु

- **बौद्ध गुफाएँ:**
  - बौद्ध धर्म के [महायान संप्रदाय](#) से संबंधित 26 बौद्ध गुफाओं को खोजा गया है, जो दूसरी और 5वीं शताब्दी की हैं।
  - गुफाओं और उनके कुछ अवशेषों में 'चैत्य' (गुंबद) दरवाज़ा और पत्थर के बसितर थे जो महायान बौद्ध स्थलों में विशिष्ट थे।
- **ब्राह्मी लिपि में शिलालेख:**
  - ब्राह्मी लिपि में 24 शिलालेख हैं, जो सभी दूसरी-पाँचवीं शताब्दी के हैं।
  - शिलालेखों में [मथुरा और कौशांबी, पावता, वेजबरदा एवं सपतनैरिका](#) जैसे स्थलों का उल्लेख है।
  - वे जिन राजाओं का उल्लेख करते हैं उनमें [भीमसेना, पोथासरि और भट्टदेव](#) शामिल हैं।
- **मंदिरों के अवशेष:**
  - 9वीं-11वीं शताब्दी के बीच कलचुरी काल के 26 मंदिरों के अवशेष **औरसंभवतः दुनिया की सबसे बड़ी वराह मूर्तकिला भी इसी अवधि की है।**
    - [कलचुरी राजवंश](#) जो गुजरात, महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में फैला है, सबसे पुराने [एलोरा और एलीफंटा गुफा](#) स्मारकों से भी जुड़ा है।
    - [वराह मूर्ति](#) भगवान वशिष्ठ के 10 अवतारों की कई अखंड मूर्तियों में से एक है।
  - दो शैव मठ भी मले हैं।
- **गुप्त काल के अवशेष:**
  - [गुप्त काल](#) के कुछ अवशेष, जैसे कदिरवाज़े के जाम और गुफाओं में नक्काशी पाई गई है।

### बांधवगढ़ टाइगर रज़िर्व के प्रमुख बटु:

- **वषिय:**
  - वर्ष 1968 में, इसे एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया था और वर्ष 1993 में नकिटवर्तनपथा अभयारण्य में [प्रोजेक्ट टाइगर](#) नेटवर्क के तहत एक बाघ अभयारण्य घोषित किया गया था।
- **ऐतहासिक महत्त्व :** इसका उल्लेख 'नारद पंचात्' और 'शवि पुराण' की प्राचीन पुस्तकों में पाया जा सकता है कि इस स्थान को रामायण से जोड़कर भी देखा जा रहा है।
  - बांधवगढ़ कला "त्रेता युग" (हृदय धर्म में मानव जातिके युगों में से एक) की एक महान कृति है।
  - यह सेंगर, कलचुरी और बघेल (माना जाता है कि इन्होंने लंबे समय तक क्षेत्रों पर शासन किया) सहित प्रमुख राजवंशों द्वारा शासित था।
- **भौगोलिक पहलू:** यह मध्य प्रदेश की बलिकूल उत्तर-पूर्वी सीमा और सतपुड़ा पर्वत शृंखलाओं के उत्तरी किनारों पर स्थित है।
  - **जलवायु:** उष्णकटिबंधीय मानसून जलवायु क्षेत्र।
  - **जलधाराएँ:** इससे होकर 20 से अधिक जलधाराएँ बहती हैं जिनमें से कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण धाराएँ हैं जैसे- जोहला, जनाध, चरणगंगा, दमनर, बनबेई, अंबानाला और अंधयारी झरिया। ये धाराएँ फरि सोन नदी (गंगा नदी की एक महत्त्वपूर्ण दक्षिणी सहायक नदी) में मलि जाती हैं।
- **जैवविविधता:** कोर ज़ोन में बाघों की काफी अधिक संख्या है। यहाँ **स्तनधारियों की 22 से अधिक प्रजातियाँ और पक्षियों की 250 प्रजातियाँ हैं।**
- अन्य प्रजातियाँ : एशियाई सयार, बंगाली लोमड़ी, सलॉथ बयिर, धारीदार लकड़बग्घा, तेंदुआ और बाघ, जंगली सुअर, नीलगाय, चकिरा एवं गौर।

### भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण:

- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, संस्कृतमंत्रालय के तहत **राष्ट्र की सांस्कृतिक वरिसतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण** के लिये एक प्रमुख संगठन है।
- यह 3650 से अधिक प्राचीन स्मारकों, पुरातात्विक स्थलों और राष्ट्रीय महत्त्व के स्थानों का प्रबंधन करता है।
- इसकी गतिविधियों में पुरातात्विक अवशेषों का सर्वेक्षण करना, पुरातात्विक स्थलों की खोज और उत्खनन, संरक्षण स्मारकों का संरक्षण एवं

रखरखाव आदि शामिल हैं।

- इसकी स्थापना 1861 में ASI के पहले महानिदेशक अलेक्जेंडर कनघिम ने की थी। अलेक्जेंडर कनघिम को "भारतीय पुरातत्त्व के जनक" के रूप में भी जाना जाता है।

[स्रोत: द द्रिष्टि](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/asi-finds-buddhist-caves-in-bandhavgarh-forests>

